Written by कुमार सौवीर
Friday, 27 April 2018 12:33

: □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ : □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ : □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□, □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ :

□□□□□ □□□□□

□□□□ : महाभयिोग को लेकर पूरे देश में खूब जमकर हुई थी नौटंकी। देश के सर्वोच्च न्यायाधीश दीपक मशि्रा को येन-केन-प्रकारेण कुर्सी से खींच कर नीचे उतार देने वाली कव्वाली को लेकर भले ही अब चर्चा॑ और ववािद खड़े हो ग॑ हों लेकनि इस प्रक्रयिा में ॑क जज पर महाभयिोग चलाने का मामला फलिहाल ठंडे बस्ते में चला गया है। अब तो यहां तक हालत हो गई है कि इस जज को कब तक नौकरी पर बना॑ रखा जा॑गा, यह सवाल फरि से सरि उठाने लगा है। हालत यह है कि इस जस्टसि के पास कोई काम-धाम भी नहीं रह गया है, और दूसरी ओर गौरतलब बात यह है कि सर्वोच्च न्यायालय के ही नरि्देशों के तहत इस जस्टसि को जबरन छुट्टी पर भेज दयिा गया था।

इस जज का नाम है जस्टसि ॑स॑न शुक्ला। शुक्॑ला जी पछिले कई दनिों से न्यायपालकिा ही नहीं, बल्कि कसिी भी गांव, कस्बे के मोहल्ले-नुक्कड़ पर भी खासे चटखारे की तरह इस्॑तेमाल कयिे जाने लगे हैं। जातगित आधारों को लेकर भी जबर्दस्॑त उठापटक चल रही है। वकील तो सीधे-सीधे तौर पर दो-फाड़ हैं, या फरि वे लखनऊ के वकील हों, या फरि इलाहाबाद के। अन्॑य प्रदेशों में भी शुक्॑ल जी का नाम खासा गरमी दे देता है। फलिहाल हालत तो यह है कि देश के सर्वोच्॑च न्॑यायाधीश दीपक मशि्रा और ॑स॑न शुक्ला के साथ ही साथ कुद्दूसी की चर्चा॑ भी खूब चल रही हैं। बहुत दूर क्यों जाते हैं, यूपी में खनन माफयिा के तौर पर अपनी ख्यात जिमा चुके समाजवादी पार्टी के मंत्री और अकूत संपत्त कि मालकि बन चुके दो-कौड़ी के गायत्री प्रजापत को जमानत देने के मामले में लखनऊ के पाक्सो जज ओपी मशि्रा जैसे न्॑यायाधीश भी अपनी नौकरी और अपने नाम-प्रतषि्॑ठा तक को अदालत-परसिरों में पोंछा लगाने लायक बन चुके हैं।

आपको बता दें कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद जस्टसि ॑स ॑न शुक्ला ने जो फैसले सुना दयिा वह अपने आप में बेहद आश्चर्यजनक और अदालतों में चल रहे गंभीर अराजकता का ॑क बड़ा नमूना है जहां न्याय की बक्रिी ठीक इसी तरीके से हो जाती है जैसे मध्य युगीन समाज में मानव मंडी। जसिके पास पैसा है आज वह कुछ भी खरीद सकता है। कम से कम जस्टसि शुक्ला और ओपी मशि्रा जैसे जजों ने उसे चरतिार्थ कर दयिा था। अरूणाचल के पूर्व मुख्॑यमंत्री कलखिो पुल ने वहां के मुख्॑यमंत्री पद रहते हु॑ भी जसि तरह आत्॑महत्॑या कर ली थी, और उसके पहले 60 पन्॑ने का सुसाइड-नोट लखि कर देश की न्॑यायपालकिा की चूलें हलिा दी थी, वह बेशर्म न्॑यायपालकिा की दशिा ही मजबूत कर रहा है।

□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□:-

[illegible]

इस मामले में हंगामा और गंभीर चर्चाएं शुरु हो गई हैं। चर्चाओं के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय के बड़े न्यायाधीश का प्रश्रय जस्टिस एसएन शुक्ला पर था। और जस्टिस शुक्ला द्वारा कुछ अभियुक्तों को जमानत देने का वह फैसला उस न्यायाधीश के संकेत पर ही किया गया था। कुछ भी हो, यह मामला खुला तो दीपक मिश्रा ने एसएन शुक्ला को न्यायकार्य से विरत करने का आदेश जारी कर दिया और उन्हें फोर्स-लीव यानी जबरन छुट्टी पर भेज दिया गया। पिछले करीब 3 महीनों से ऐसे ही शुक्ला ऐसे जबरन अवकाश पर हैं। मतलब यह कि उन्हें वेतन और सुविधाएं तो दी जा रही हैं। मगर कोई भी फाइल उनके पास नहीं पहुंच रही है। सही शब्दों में कहें तो एक एसएन शुक्ला फिलहाल एक ढक्कन की तरह है बनकर रह गए, जिनकी कोई भी उपयोगिता हाईकोर्ट को नहीं बच पायी।

आश्चर्य की बात है कि ऐसे माहौल में कि जब अदालतों में मुकदमों का अंबार लगा हुआ है और उस के मुकाबले जजों की संख्या न्यूनतम है, ऐसी हालत में लंबे समय तक जज को खाली पर बैठाना बेहद दुखद हालातों का परिचायक होता है। अगर न्याय प्रशासन ने यह फैसला किया था कि किसी जज को जबरन छुट्टी पर भेजा जाएगा या उसे महाभियोग के लिए केंद्र सरकार के पास भेजा जाएगा तो फिर उस महाभियोग कार्रवाई को अब तक क्यों नहीं क्रियान्वित किया गया। क्या वजह है कि पिछले कई महीनों से ऐसे ही शुक्ला का मामला दिल्ली की सत्ता गलियारों में दबा बैठा है और सरकार न तो नए जजों की भर्ती कर रही है और नहीं महाभियोग चलाने का कोई फैसला ही कर पा रही है।

इस मामले में सबसे बड़ा मोड़ यह आया है कि एसएन शुक्ला ने अपनी छुट्टी की अर्जी और बढ़ा दी है। विश्वस्त सूत्र बताते हैं कि शुक्ला ने अपनी छुट्टी की अवधि और बढ़ाने की दरख्वास्त चीफ जस्टिस को भेज दी है। लेकिन न्याय प्रशासन से जुड़े एक वरिष्ठ सूत्र ने बताया कि न्याय प्रशासन इस मामले में जस्टिस शुक्ला को अब अधिक छुट्टी देने के पक्ष में नहीं है।

कुछ भी हो यह हालत बेहद गंभीर और दयनीय भी है।

[illegible]:-

Written by कुमार सौवीर
Friday, 27 April 2018 12:33

□□□□□□□ □□□□□ □□□□□